होगा। इसलिए हम उनको बाध्य नहीं कर पाते हैं। लेकिन हमने यह कोशिश की है कि आयरन ओर की वेजिज और मैंगानीज ओर की वेजिज में जो फर्क है, उस को कम किया जाए।

संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी का स्थान

*539. श्री आर० बी० बड़े :
श्री अटल बिहारी वाजपेयी :

क्या विदेश मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी को स्थान दिलाने के लिए प्रथम प्रयास कब किया था ;

(ख) उसके बाद क्या-क्या प्रयास किए गए हैं तथा उनके क्या परिणाम निकले हैं तथा इस सम्बन्ध में भावी योजना क्या है ; और

(ग) उन देशों के नाम क्या हैं जो संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी को स्थान मिलने के पक्ष में हैं ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI BIPINPAL DAS): (a) and (b). No attempt has been made by India so far. Any addition to the list of Official and Working Languages of the U.N. General Assembly would require an amendment of the Rules of Procedure supported by a majority of the Members present and voting. Such an attempt can be made only on the basis of an assessment of possible success of such a move.

(c) This has not been specifically ascertained.

श्री आर० बी० बड़े : सभी देशों ने अपनी अपनी जुबानों के बारे में प्रयत्न किया है। मैं यह जानना चाहता हूं कि सरकार ने हिन्दी के बारे में अभी तक प्रयत्न क्यों नहीं किया है।

SHRI BIPINPAL DAS: Sir, I have made it clear that according to our assessment, at the moment, such a move is not likely to succeed and therefore we are waiting for an opportune moment.

श्री आर० बी० बड़े : मंत्री महोदय ने कहा है कि इसमें सक्सेस नहीं हो सकती है। मैं यह जानना चाहता हूं कि सरकार ने इस बारे में कब प्रयत्न किया। वह कैसे कहते हैं कि इसमें सक्सेस नहीं हो सकती है ?

SHRI BIPINPAL DAS: I have explained the Rules of Procedure and there the amendment is to be supported by a majority of the Members. An assessment is made by lobbying. Such an assessment tells us that this is not an opportune moment to make a move.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्य प्रश्न बाद में पूछूंगा। यह असेसमेंट कब किया गया था, क्या इस का कोई रिकार्ड है ?

SHRI BIPINPAL DAS: I have said already that such an assessment is made. It is a continuous process. It is only at the opportune moment when we shall make a move. This is not an opportune moment.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्या यह सच नहीं है कि संसार में हिन्दी बोलने वाले अंग्रेजी और फ्रेंच भाषा बोलने वालों से संख्या में ज्यादा हैं ? हिन्दी केवल भारत में ही नहीं बोली जाती है, बल्कि भारत के पड़ोसी देशों और अफ्रीका के देशों में भी हिन्दी बोलने वाले लोग रहते हैं। क्या यह सच है भारत सरकार ने अभी तक इस मामले को इसलिए नहीं उठाया है, क्योंकि उसके मन में एक हीन भावना है, और वह हीन भावना इसमें बाधक बन रही है ?

SHRI BIPINPAL DAS: I am sorry Shri Vajapayee has given expression to some thing to which we totally dis-

इस में हीन भावना की कोई बात नही है।

agree. But the question is: one State, one Vote. Every Member has one vote. It does not depend upon the total population speaking a particular language. It depends upon the number of countries speaking a particular language. Therefore, we must be sure whether, if we make a move, we will be supported by other countries. Our assessment is that this is not the opportune time.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: He is misleading the House. I would like to know when were the other countries aproached and which were the countries which were approached What was their response? He is talking in the air. No assessment has been made so far.

SHRI PIPINPAL DAS: I am not talking in the air. I hope Shri Vajpayee will know how such things are done in the forum of United Nations. It is done thrtugh lobbying and that is what I have said.

श्री नवल किशोर सिंह : क्या यह सही है कि हिन्दी के लिए संयुक्त राष्ट्र और दूसरे देशों में किये जाने वाले प्रयत्नो मे सरकार को कमजोरी इस लिए महसूस होती है कि जब हम हिन्दी बोलने वाले विदेशों में जाते हैं, तो वहां दूसरों से छोड़िये, आपस में भी अंग्रेजी में ही बात करते हैं ?

SHRI BIPINPAL DAS: I want to make it clear that is not the basis of the present situation.

श्री कृष्ण चन्द्र पांडे : अध्यक्ष महोदय, यह प्रश्न इतना साधारण नही है। यह प्रश्न बहुत ही गम्भीर है, और राष्ट्रीय प्रश्न है। मंत्री महोदय को इस का जवाब अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देना चाहिए। उन्हें इस प्रश्न को इस तरह टालना नहीं चाहिए। मैं यह जानना चाहता हूं कि सरकार ने हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की एक भाषा बनाने के लिए कब प्रयास किया था। उसने कोई प्रयास ही नही किया, और मंत्री महोदय कह रहे हैं कि वहां कोई इस बात को नही मानेगा। मैं यह जानता चाहता हूं कि अगर सरकार ने इस सम्बन्ध में कोई प्रयास किया था, तो कब किया था, और अगर नही किया था, तो क्या वह कोई प्रयास करना चाहती है या नही।

SHRI BIPINPAL DAS: I have already answered that question. Before we put a formal resolution before the United Nations we have to see as to how many countries will be there to support our resolution. Our assessment is if we make a formal move, it is not likely to succeed at this moment.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय लगातार ग़लत बातें कह रहे हैं और सदन को गुमराह कर रहे है। वह बताये कि विदेश मंत्रालय में कब यह फैसला हुआ कि हम हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के बारे में लाबीइंग करेंगे। अभी तो कोई फैसला ही नही हुआ है। वे लाबीइग कैसे करेंगे ?

श्री समर गुह : मंत्री महोदय का जवाब सुन कर मुझे ताज्जुब हुआ है। हमारे प्रस्ताव को समर्थन मिलेगा या नहीं, यह तो दूसरी बात है। अगर सरकार यह समझती है कि यह प्रस्ताव न्यायसंगत है, और इस को वहां रखना चाहिए, तो इस को समर्थन मिले या न मिले इस को एक या दो बार नही, हजार बार रखना चाहिए। दूसरी बात यह है कि दुनिया मे हिन्दुस्तान की आबादी को द्वितीय स्थान प्राप्त है। इस लिए इस की जो राष्ट्र-भाषा हिन्दी है, उस को संयुक्त राष्ट्र सघ मे स्थान न मिले, यह हम कैसे

मान सकते हैं ? अगर हम अपना प्रस्ताव को एक बार नही, बल्कि बार बार लायेंगे, तो दुनिया हमारे न्यायसगत दावे को जरूर मानेगी । मैं यह जानना चाहता हू कि सरकार सयुक्त राष्ट्र सघ मे यह प्रस्ताव कब लायेगी ।

अध्यक्ष महोदय : जब सोशलिस्ट पार्टी ने श्री समर गुह को हिन्दी बोलना सिखा दिया, तो आप वहा हिन्दी का इस्तेमाल क्यो नही करवाते ?

SHRI BIPINPAL DAS Sir, Prof Guha is a very knowledgable man and I am sure he knows about the languages

MR SPEAKER: I am sure if you send him to the United Nations, he will get it done.

SHRI BIPINPAL DAS Sir, up till now, only six languages have been recognised as official or working languages of United Nations Five of them have been there right from the beginning This is because of historical reasons The languages of those peoples, those powers who helped in the establishment of the United Nations were immediately recognised, right from the start, Russian, Chinese, English, French and Spanish Latter on, only last year the only addition that was made was Arabic and Arabic is a language which is spoken in 19 States So, as I said, ...

श्री समर गुह : यह 19 स्टेट्स की बात नही है, आबादी की बात है ।

SHRI BIPINPAL DAS Arabic also succeeded after so many years They succeeded only last year If we see any chance of success at any point of time, we will certainly move a resolution. When there is no chance, there is no sense in moving a resolution. (*Interruptions*)

MR SPEAKER: Order please. Please sit down.

श्री समर गुह : अगर न्यायसगत है तो क्यो नही आप कोशिश करते ?

श्री डी० एन० तिवारी : अभी मत्री महोदय ने कहा कि अरेबिक भाषा 19 देशों मे प्रचलित है इसलिए गत वर्ष उस को मान्यता मिली । लेकिन चाइनीज तो एक ही देश मे बोली जाती है, उस की मान्यता शुरू से है और चूकि उस का पापुलेशन इतना बडा है इसलिए उस को मान्यता देनी पडी । भारतवर्ष का पापुलेशन भी चाइना से थोडा ही कम है, तो मै जानना चाहूगा कि क्या सरकार ने कभी ऐसा अटेम्प्ट किया, कोई प्रयत्न किया, लाबीइग किया, कोई कसल्टेशन किया कि हिन्दी भी राष्ट्र सघ की भाषा मान ली जाय ?

SHRI BIPINPAL DAS Sir, the question of China stands on a diffifferent footing China was one of the Founders of the United Nations Right from the beginning, that language came to be accepted as the official language of the United Nations So far as India is concerned, we have not made any attempt so far Our assessment is that it is not likely to succeed This is the point

श्रीमती सावित्री श्याम : क्या यह सही है कि सयुक्त राष्ट्र सघ मे हिन्दी के लिए अब तक कोई प्रयास नही किया गया, और इसलिए नही किया गया कि विश्व के अखबारो मे उस के लिए पब्लिसिटी नही मिली ?

अध्यक्ष महोदय : यह क्या सवाल हुआ ?

श्री नुरुल हुडा क्या यह सच है कि हमारे जो राजदूत और राजनीतिज्ञ विदेशो मे जाते है वह हिन्दी मे बोलने की कोशिश नही करते है सिर्फ इग्लिश और दूसरी विदेशी भाषाओ मे बोलते हैं ? इसलिए सरकार को यह चेष्ठा करनी चाहिए कि हमारे जो राजदूत और राजनीतिज्ञ जाते हैं वे राष्ट्र सघ में और

विदेशों की राजधानियों में दूसरी जबानों के साथ हिन्दी में भी बातचीत करें। सरकार ने इस के लिए क्या कदम उठाया है ?

SHRI BIPINPAL DAS: Sir, it is absolutely untrue that our mission abroad are not trying to make Hindi popular or that they do not use Hindi in their conversations. As a result of Government efforts, today 39 countries have made arrangements for teaching and learning of Hindi and 93 Universities in the world have provided Hindi as a language for teaching.

श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव : मंत्री महोदय ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ में जो भाषाएं आई उस के लिए और देशों ने काफी लाबीइंग किया, तो मैं यह जानना चाहता हूं कि हिन्दी भी संयुक्त राष्ट्र संघ में एक भाषा हो उस के लिए लाबीइंग आज तक शुरू हुई या नहीं और हुई तो उस का क्या परिणाम हुआ ? इन्होंने बार बार दोहराया है कि हम असेसमेंट कर रहे हैं और असेसमेंट के आधार पर शुरू करेंगे तो इन्होंने अभी तक शुरू किया या नहीं ? नेपाल भी उस के लिए सहयोग करेगा, फ़िजी भी करेगा, मारीशस भी करेगा। बहुत से देश ऐसे हैं जो सहयोग करेंगे। तो इन्होंने लाबीइंग शुरू की या नहीं यह मैं जानना चाहता हूं।

SHRI BIPINPAL DAS: We have taken note of the views expressed by hon. members in this House and we will certainly act accordingly. But for his information, I may tell him that it is not that all other languages have got recognised in the UN because of their efforts. Only one language, that also last year after long years of effort, has got recognition. Our assessment, which is made by various means, is that if we make an attempt now, it is not likely to succeed.

श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव : अध्यक्ष महोदय, मेरे सवाल का जवाब नहीं आया। ये बार बार उसी पर जोर देते हैं कि हमारा असेसमेंट है। असेसमेंट का आधार क्या है ? असेसमेंट ऐसे कहने से तो काम नहीं चलेगा।

श्री पीलू मोदी : अध्यक्ष महोदय, आप के माध्यम से मैं मंत्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की संसद में मैंने खुद यहां हिन्दी, कन्नड़, तामिल, बंगला और गुजराती अब तक सुना है तो क्या यूनाइटेड नेशंस में ये सब भाषाएं शामिल करने के लिए वह प्रार्थना करेंगे या नहीं ?

SHRI BIPINPAL DAS: I have no answer.

Talks with Pakistan on Over-Flights

+

*542. SHRI P. GANGADEB:
SHRI RAGHUNANDAN LAL BHATIA:

Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether India had suggested to Pakistan that the talks on over-flights could be held in Delhi;

(b) whether any invitation has since been sent to Pakistan to send a delegation for the talks; and

(c) if so, whether any response has been received to India's invitation and if so, the facts thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI BIPINPAL DAS): (a) to (c). In the Joint Communique issued at the conclusion of talks on civil aviation matters at Rawalpindi on 22nd November 1974, it was mentioned that the talks would be continued in another meeting in Delhi which would be held at a mutually convenient date. Since then we have informally suggested to Pakistan that the Pakistan Foreign Secretary would be welcome to visit Delhi for the next round of talks on this subject if it is convenient to him. We have so far not received any confirmation from Pakistan about the likely date on which they would send a delegation to Delhi.

SHRI P. GANGADEB: In view of the fact that Pakistan is not coming